डॉ. बिभा कुमारी, हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र एवं बीए प्रथम खंड, वैकल्पिक हिंदी, पत्र प्रथम

द्विवेदी युग की प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि –

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर आधुनिक युग के दूसरे चरण का नाम द्विवेदी युग रखा गया। उनकी हिंदी भाषा के प्रति अगाध निष्ठा थी। उन्होंने लेखकों और कवियों को प्रेरित भी किया और प्रोत्साहित भी किया। उनकी आलोचना और उनके निबंधों से कवियों और लेखकों को दिशा प्राप्त होती रही। उन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन किया। हिंदी भाषा और साहित्य के लिए उनका योगदान अमूल्य है। आधुनिक युग में काव्य लेखन को प्रोत्साहित करने और खड़ी बोली का परिष्कार करने हेतु हिंदी भाषा और साहित्य सदैव उनका ऋणी रहैगा। भारतेंदु युग में काव्य की भाषा ब्रजभाषा ही रह गई थी, परंतु द्विवेदी युग में आकर खड़ी बोली में काव्य लिखा गया और इसी युग में खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य 'प्रियप्रवास' अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध ने लिखा। आधुनिक हिंदी काव्य और खड़ी बोली के परिनिष्ठित रूप का श्रेय आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को ही जाता है। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने भी इसी युग में 'यशोधरा' साकेत जैसी महान कृतियों की रचना की। इन रचनाओं की प्रेरणा उन्हें आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' से मिली। द्विवेदी युग की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं –

1. साधना की प्रवृत्ति – द्विवेदी युग में साहित्यकारों में भाषा और साहित्य को प्रोन्नत करने की दृढ़ इच्छाशक्ति थी। इसके लिए वे निरंतर साधनारत रहते थे, कठिन अभ्यास करते थे। द्विवेदी युग के तुरंत बाद ही हर विधा में जिस ऊंचाई के दर्शन होते हैं उसकी पृष्ठभूमि में द्विवेदी युग की साधना और कठिन अभ्यास की बहुत बड़ी भूमिका है।
2. खड़ी बोली का परिष्कार – द्विवेदी युग में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने खड़ी बोली के परिष्कार हेतु स्वयं भी कठिन प्रयास किया तथा अन्य कवियों – साहित्यकारों को भी खड़ी बोली के परिष्कार हेतु प्रेरित किया। सरस्वती पत्रिका के संपादन का दायित्व संभालते हुए उन्होंने खड़ी बोली के परिष्कार हेतु हरसंभव प्रयास किया।
3. साहित्य में जनजीवन का प्रवेश – आधुनिक साहित्य की यह विशेषता है कि इसमें जनजीवन को स्थान प्राप्त होता है। आदिकाल एवं मध्यकाल में साहित्य के केंद्र में राजा एवं ईश्वर रहे, परंतु आधुनिक काल में साहित्य में जनजीवन का प्रवेश हो गया। भारतेंदु युग में ही साहित्य के विषय के रूप में जनजीवन का प्रवेश हो गया था परंतु द्विवेदी युग तक आते – आते पूर्ण रूप से साहित्य में जनजीवन का प्रवेश हो गया। जनजीवन के साथ – साथ युगीन परिस्थितियों एवं समस्याओं को भी साहित्य में उपयुक्त स्थान दिया जाने लगा।
4. नई गद्य विधाओं का विकास - गद्य विधा का आरंभ भारतेंदु युग में ही हो गया था, परंतु निबंध एवं नाटक ही प्रमुखता से लिखे गए। इस युग में आकर उपन्यास, कहानी, आलोचना आदि गद्य विधाओं ने समुचित स्वरूप ग्रहण किया।

5. काव्य विधा का चहुमुखी विकास - द्विवेदी युग की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस युग में काव्य – लेखन में खड़ी बोली की प्रतिष्ठा हो गई। इस युग में प्रबंध काव्य लेखन परिमाण एवं गुण दोनों ही दृष्टि से संतोषजनक प्रतीत होता है। इसी युग में नवीन भाव – बोध के साथ ही सर्वप्रथम स्वच्छन्दतावाद के दर्शन हुए। श्रीधर पाठक खड़ी बोली के पहले ऐसे कवि हैं जिनमें काव्यगत स्वच्छन्दता के दर्शन होते हैं।
6. पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथानक – द्विवेदी युगीन कवियों ने पौराणिक और ऐतिहासिक कथानकों को आधार बनाकर प्रबंध – काव्य लिखे। इन पौराणिक कथाओं को नवीन आधुनिक परिस्थितियों और संदर्भों में चित्रित किया है। शिल्प के स्तर पर भी इस युग के काव्य में नए प्रयोग हुए हैं। हरिऔध जी उर्दू छंदों का इस्तेमाल भी अधिकार पूर्वक करते थे, तत्सम पदावली भी लिख सकते थे, इसके साथ – साथ बोलचाल की मुहावरेदार जुबान में भी लिख सकते थे। इस युग के प्रमुख रचनाकार हुए –

स्वयं महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, मैथिली शरण गुप्त, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी आदि।